अन्तिम तैयारी (1:1-11)

हॉलीवुड में फिल्में बनाने वाले एक प्रसिद्ध व्यक्ति ने कहा कि फिल्म का आरज़्भ धमाके के साथ होकर उसे चरम तक पहुंचना चाहिए। उसी कसौटी का प्रयोग करते हुए, प्रेरितों की पुस्तक के अध्याय दो का, जिसमें पवित्र आत्मा आग की जीभों और बड़े ज़ोर की आंधी की आवाज़ के साथ उतरा, एक महान आरज़्भ रहा होगा! परन्तु पहला अध्याय शोर और आवेश के साथ आरज़्भ होने के विपरीत बड़ी सहजता से आरज़्भ होता है। यह अध्याय यीशु द्वारा अपने प्रेरितों के साथ बात करने से आरज़्भ होकर विशेष काम के लिए बुलाई गई सभा के साथ समाप्त होता है। सामान्यत: ऐसी सभाएं नींद दिलाने वाली होती हैं और उनसे उत्साह नहीं भरता।

प्रेरितों के काम की पुस्तक का आरज़्भ ऐसे क्यों होता है? इसका कारण है: उस महान दिन के लिए जिसे प्रेरितों 2 में चित्रित किया गया है। *तैयारी* की आवश्यकता थी, प्रेरितों के काम अध्याय 2 को क्रियान्वित करने के लिए परमेश्वर अनादिकाल से तैयारी कर रहा था (इफिसियों 3:10, 11) - परन्तु अब तैयारी के अन्तिम पल थे। विशेषकर, यह समय प्रेरितों के लिए अन्तिम तैयारी का था।

इस अध्याय में हमें बहुत सी शिक्षाएं मिलती हैं। विशेषकर हमारे लिए यह सीखना आवश्यक है कि परमेश्वर का कार्य करने के लिए पर्याप्त तैयारी आवश्यक है।

एक समीक्षा दी गई (1:1-5)

लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक अपने पाठकों को यह स्मरण दिलाते हुए लिखनी आरज़्भ की कि ''हे थियुफिलुस, मैंने पहली पुस्तिका उन बातों के विषय में लिखी, जो यीशु[1] करता और सिखाता[2] रहा। उस दिन तक जब वह...ऊपर न उठाया गया'' (पद 1, 2)। यहां 'पहली पुस्तिका' लूका रचित सुसमाचार को कहा गया है। क्योंकि उसने प्रेरितों की पुस्तक में अपनी 'पहली पुस्तिका' को याद दिलाया है इसलिए अवश्य ही लूका को आशा होगी कि उसके पाठक उसके द्वारा लिखित सुसमाचार की पुस्तक से, विशेषकर उसके अन्तिम अध्यायों से परिचित होंगे।

लूका की पुस्तक का अन्तिम दृश्य यीशु का ऊपर उठाया जाना और प्रेरितों का यरूशलेम में लौट जाना है (लूका 24:50-53)। प्रेरितों की पुस्तक के पहले अध्याय में हम पाते हैं कि ''वह ... (यीशु) उन प्रेरितों को, जिन्हें उसने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा'' (आयत 2ख) देने के बाद ऊपर उठा लिया गया। लूका रचित सुसमाचार में हम देखते हैं कि वह ''आज्ञा'' कि वे यीशु के ''गवाह'' बनकर यह प्रमाणित करें कि ''यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के

नाम से किया जाएगा'' प्रेरितों को दी गई थी (24:47)। अन्य शब्दों में यह ''आज्ञा'' ग्रेट कमीशन अर्थात महान आज्ञा ही है (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16)।

प्रेरितों 1:3 में लूका ने कहा कि यीशु ने मुर्दों में से जी उठने के बाद प्रेरितों को दर्शन देकर अपनी गवाही देने के योग्य बना दिया: ''और उसने दु:ख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा; और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा।'' सुसमाचार की अपनी पुस्तक में लूका ने यीशु द्वारा दिए गए ठोस प्रमाणों के उदाहरण दिए थे; उसने अपने शिष्यों से उसे छूने को कहा, उसने उनके सामने खाना खाया ताकि वे यह जान सकें कि वह कोई आत्मा नहीं था (लूका 24:36-43; तु. प्रेरितों 10:40, 41)।

पुनरुत्थान के बाद यीशु के बारे में जो भी वर्णन मिलता है, उसमें अधिकतर उसके जी उठने के दिन की घटनाएं ही हैं। तीसरी आयत में हम पढ़ते हैं कि यीशु काफ़ी देर तक अर्थात पूरे चालीस दिन प्रेरितों को (प्रेरितों 13:31), *कई बार* स्वयं दर्शन देता रहा।[3]

चालीस दिन तक इस पृथ्वी पर रहने का यीशु का उद्देश्य केवल अपने दोस्तों की संगति का आनन्द लेना नहीं था, बल्कि वह अपने शिष्यों को *तैयारी* करवाने के लिए ही रुका था। यीशु उनके साथ ''परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा'' (पद 3ख)। अपनी निजी सेवकाई के आरज़्भ से यीशु का प्रमुज़ विषय ''राज्य'' था (देखिए मत्ती 4:17)। उसके कई महान दृष्टांत इन्हीं शब्दों के साथ आरज़्भ हुए ''कि स्वर्ग का राज्य ... के समान है ...'' (मत्ती 13:31, 33, 44, 45, 47)। अब यीशु ने अपने शिष्यों के मनों में स्वर्ग के राज्य के सज़्बन्ध में अपनी शिक्षा को ताज़ा किया। अन्य बातों के साथ उसने उनको अपना यह वायदा भी याद दिलाया होगा कि राज्य का आना *सामर्थ के साथ* होगा: ''... कि जो यहां खड़े हैं, उनमें से कोई-कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे'' (मरकुस 9:1)।

जब मैं और आप अपने आप को बहुत बड़ी सेवा के लिए तैयार करते हैं, तो प्रजु की शिक्षा और ''यहोवा ने हमारे साथ बड़े-बड़े काम किए हैं'' (भजन संहिता 126:3) को याद रखना बहुत लाभदायक होगा।

एक शासन की प्रतिज्ञा (1:4-8)

अपने शिष्यों को राज्य की शिक्षा देकर यीशु ने एक बहुत बड़ी बाधा को दूर करना था। जब यीशु ने ''राज्य'' शब्द का उपयोग किया, तो उसके मन में इसकी अलग विचारधारा थी, परन्तु जब शिष्यों ने उस से ''राज्य'' शब्द सुना तो उनके मन में इसकी अलग धारणा थी। यीशु के मन में एक *आध्यात्मिक* राज्य की स्थापना थी, जिसका शासन परमेश्वर ने अपने लोगों के मनों और जीवनों पर करना था। यीशु के शिष्यों के मनों में *भौतिक* राज्य था - कि मसीह इस्राएल के शत्रुओं को हराकर यरूशलेम में अपना सिंहासन स्थापित करेगा।[4] यीशु ने ज़ोर देकर कहा था कि उसका राज्य ''इस जगत का *नहीं*'' (यूहन्ना 18:36), परन्तु उसके शिष्यों के लिए यह बात *समझना* बहुत कठिन था।

प्रेरितों की कम समझ ही 1:4-8 की पृष्ठभूमि है: इन आयतों में, यीशु ने उनके साथ एक अद्‌भुत *वायदा* किया, जो उनकी तैयारी के लिए बहुत आवश्यक था। प्रेरित किसी राजनीतिक राज्य की बात सोच रहे थे, जिसमें उनको अच्छी-अच्छी पदवियां मिलें। यीशु उनको बताना चाहता था कि परमेश्वर के पास उनके लिए उससे कहीं बेहतर योजना थी जिसकी वे अपेक्षा कर रहे थे। वे *पदवी* पाना चाह रहे थे; यीशु ने उनसे कहा कि वे *शक्ति* पाएंगे।

> ''और उनसे मिलकर,[5] उन्हें आज्ञा दी कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया[6] है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा[7] पाओगे'' (पद 4, 5)।

पिता ने यीशु और अन्यों के द्वारा यह वायदा किया था कि राज्य ''निकट'' है (मत्ती 4:17); यह वायदा अब राज्य स्थापित करके पूरा किया जाना था।[8] फिर, पिता ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा भी यह वायदा किया था कि मसीह अपने शिष्यों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा: ''मैं तो तुझें पानी से बपतिस्मा देता हूं, परन्तु वह आने वाला है, जो मुझ से शक्तिमान है; मैं तो इस योग्य भी नहीं हूं, कि उसके जूतों का बन्ध खोल सकूं; वह तुझें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा'' (लूका 3:16)।[9] उन्होंने यीशु को यह ज़ोर देकर बताते हुए सुना था कि उनकी अगुआई करने के लिए पवित्र आत्मा को भेजा जाएगा (यूहन्ना 14:26; तु. 15:26, 27; 16:12, 13; लूका 12:12)। अब यीशु ने उनसे कहा कि पवित्र आत्मा को भेजने का वह वायदा ''थोड़े ही दिनों में'' पूरा होगा।

राज्य की स्थापना और पवित्र आत्मा का आना - दोनों ही वायदे आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। पवित्र आत्मा भेजने का वायदा पूरा होने के लिए राज्य की स्थापना के वायदे का पूरा होना आवश्यक था।

प्रेरितों की इच्छा से लगा कि उनके मन कहीं और हैं। राज्य के बारे में यीशु की शिक्षाओं ने उनकी राजनीतिक इच्छाओं को जगा दिया था: ''उन्होंने उससे पूछा, हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल का राज्य फेर देगा?'' (पद 6)। प्रेरितों की सोच को समझने के लिए ''फेर'' और ''इस्राएल'' दो शब्द प्रमुख हैं: वे अभी भी यही सोच रहे थे कि यीशु इस्राएल के राज्य की सांसारिक महिमा को बहाल कर देगा जो दाऊद और सुलेमान के दिनों में थी, जब इस्राएल सारे संसार में एक महान राज्य के रूप में जाना जाता था।[10] एफ.एफ. ब्रूस ने इस सम्बन्ध में लिखा है: ''उनका यह प्रश्न धर्मतन्त्र की उनकी उस पूर्व-आशा की अन्तिम किरण है जिसमें उन्होंने स्वयं मुख्य कार्यकारी होना था।''

वाक्यांश ''उन्होंने उससे पूछा'' से लगता है कि यह प्रश्न वे यीशु से कई बार पूछ चुके थे: ''कब? हे प्रभु कब?''

मेरे विचार से यीशु ने उत्तर देते हुए सिर हिला दिया होगा: ''उन समयों या कालों[11]

को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं; परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे।'' (पद 7, 8क)। राज्य के सम्बन्ध में उनकी नासमझी के लिए यीशु ने उनको डांटा नहीं; राज्य की आत्मिक तस्वीर थोड़ी ही देर में उन पर स्पष्ट होने वाली थी।[12] बल्कि, यीशु ने उन्हें परमेश्वर की समय-सारणी बता दी। उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि कब और क्यों महत्वपूर्ण है। वस्तुत: उसने कहा, ''मैं तुम्हें परमेश्वर का कैलेंडर नहीं बताऊंगा, परन्तु जब *पवित्र आत्मा* तुम पर आएगा तब तुम *सामर्थ* पाओगे तो तुम्हें पता चल जाएगा कि राज्य आ चुका है।''

याद रखें, यीशु ने कहा था कि राज्य सामर्थ के साथ आएगा (मरकुस 9:1)। अब यीशु ने कहा कि वह, सामर्थ पवित्र आत्मा के आने पर आएगी। इस प्रकार पवित्र आत्मा के आने पर, सामर्थ आनी थी और उसी समय राज्य की स्थापना करने का परमेश्वर का वायदा पूरा होना था।

सम्भवत, प्रेरितों के मनों में ये सभी विचार घूम रहे होंगे: ''थोड़े ही दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (पद 5)। ''जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे'' (पद 8)। वे अवश्य ही हैरान होते होंगे कि यीशु की इन बातों का क्या अर्थ है?

यीशु ने उनको आश्चर्य में डाले नहीं रखा। प्रेरितों को मसीह के राज्य के *विश्वव्यापी* रूप को समझने में भी कठिनाई हो रही थी;[13] उनके सपने तो फलस्तीन के छोटे से देश में प्रतिष्ठा पाने के रहे होंगे। यीशु ने कहा कि तुम ''यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे'' (आयत 8ख)! सम्भवत: प्रेरितों में से कोई भी सीरिया के दक्षिणी सिरे से और आगे उत्तर की ओर, गलील सागर के पूर्वी तट से दूर पूर्व की ओर, मिस्र की सीमा से दूर दक्षिण की ओर या भूमध्य सिरे से दूर पश्चिम की ओर नहीं गया था। अब यीशु ने उनको बताया कि वे सारे संसार में जाकर उसके जी उठने के सुसमाचार का प्रचार करेंगे![14]

नीति का जो नक्शा यीशु ने दिया, वह हर पीढ़ी के लिए चुनौती है: घर (यरूशलेम) से आरम्भ करके, आसपास (यहूदिया और सामरिया) के इलाके तक, और अन्त में संसार के कोने-कोने में (पृथ्वी के दूरस्थ स्थानों पर) सुसमाचार सुनाना![15]

यीशु ने कहा कि प्रेरित संसार में प्रचार करते हुए, उसके ''गवाह'' होंगे (आयत 8; लूका 24:48 भी देखें)। प्रेरितों की पुस्तक में ''गवाह'' शब्द मुख्य है। यूनानी शब्द का अनुवाद गवाह अलग-अलग ढंग से संज्ञा या क्रिया रूप में उनत्तीस बार प्रयोग किया गया है। इसका अनुवाद ''गवाह,'' ''प्रमाण'' (या सहायक), या ''चर्चित'' हो सकता है। इसका मूल यूनानी शब्द मारतुस (*martus* या *martur*) है, इसी शब्द से शहीद के लिए अंग्रेज़ी का ''मारटिर'' शब्द बना है - शहीद उसे कहा जाता है जो मृत्यु के द्वारा मसीह की गवाही देता है।

''गवाह'' के अर्थ के लिए मुख्य शब्द ''प्रत्यक्षदर्शी'' लिया जाता है: जो शपथपूर्वक वह सब बता सकता हो, जो उसने देखा या सुना है (प्रेरितों 4:20)। प्रेरित विशेष रूप से

उसके गवाह थे: वे *मसीह के पुनरुत्थान* का प्रमाण दे सकते थे क्योंकि उन्होंने उसे मृतकों में से जी उठने के बाद *देखा* था (1:22)। लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में सामान्यत: ''गवाही'' शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया है। क्योंकि आपने और मैंने प्रभु को जीवित नहीं देखा, इसलिए हम प्रेरितों की तरह गवाह नहीं हो सकते।[16]

दूसरी ओर, लूका ने मसीह के पुनरुत्थान के बारे में प्रेरितों के अलावा कहीं-कहीं ''गवाह'' को संज्ञा या क्रिया रूप में भी इस्तेमाल किया है।[17] उदाहरण-स्वरूप, पहले मसीही शहीद अर्थात स्तिफनुस को मसीह का ''गवाह'' कहा गया (22:20)। हम भी उसी तरह से गवाह बन सकते हैं जैसे स्तिफनुस बना: जो कुछ परमेश्वर ने किया[18] (विशेषकर हमारे जीवनों में) हम उसे दूसरे लोगों को बता सकते हैं और यदि आवश्यकता पड़े तो अपने इस विश्वास के कारण मरने के लिए तैयार भी रहें। मसीहियों के लिए आज की सब से बड़ी आवश्यकता यही है कि वे चाहे घर में हों या घर से बाहर अपने विश्वास की घोषणा निर्भीक होकर करें!

उस काम को पूरा करने की तैयारी के लिए चुनौती को पहचानना और यह महसूस करना आवश्यक है कि जो कुछ करने के लिए परमेश्वर हमें कहता है, उसे करने के लिए वह हमें शक्ति भी देता है। आश्चर्यकर्म करने की जो शक्ति प्रेरितों के पास थी, यदि वह हमारे पास नहीं है तो क्या हुआ, हमारे पास सामर्थ तो है, ''जो हम में कार्य करता है'' (इफिसियों 3:20)!

वापसी की घोषणा हुई (1:9-11)

चालीस दिन के बाद, यीशु ने वह काम पूरा कर दिया, जिसे करने के लिए वह रुका हुआ था, और अब उसका स्वर्ग वापस जाने का समय था। लूका 24:50, 51 लिखता है, ''तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी और उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया।'' स्वर्गारोहण का वर्णन प्रेरितों 1 में इन शब्दों में मिलता है, ''यह कहकर वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उनकी आंखों से छिपा लिया'' (पद 9)।[19]

यीशु का स्वर्ग पर उठाया जाना इस पृथ्वी पर उसके अस्थायी निवास का अन्त था। उसने अपना काम पूरा कर लिया था; अब वह महिमा पाने के लिए वापिस अपने स्थान पर जा रहा था![20] यद्यपि, शिष्य परेशान थे। आयत 10 हमें बताती है कि उसके जाते समय वे आकाश की ओर ताक रहे थे। पुनरुत्थान के बाद से अब तक उसका उनसे इस प्रकार रहस्यमय ढंग से अलग होना कोई नई बात नहीं थी (लूका 24:31)। वे अवश्य ही आश्चर्यचकित होंगे कि वह सचमुच चला तो गया है परन्तु फिर दोबारा अचानक प्रकट हो जाएगा जिस प्रकार वह पिछले दिनों में बार-बार होता रहता था (यूहन्ना 20:16, 19)।

प्रेरितों का यह आश्चर्य अधिक देर तक नहीं रहा, क्योंकि ''देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहने हुए उनके पास आ खड़े हुए'' (पद 10ख)। ये परमेश्वर की ओर से भेजे गए स्वर्गदूत थे[21] और ''वे कहने लगे, हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो?[22]

यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा'' (पद 11)।

प्रेरितों की भावनात्मक और मानसिक तैयारी के लिए स्वर्गदूतों की ये बातें आवश्यक थीं। उनके संदेश के पहले भाग में *चुनौती* थी: ''... यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है।'' यीशु चला गया था। अब उसने उन्हें पुन: दिखाई नहीं देना था जैसे वह पिछले चालीस दिनों में होता रहा था। वह तो स्वर्ग में था, इसलिए उसका काम अब उन्होंने ही करना था। स्वर्गदूत के संदेश के दूसरे ज़ाग में *तसल्ली* है: ''यही यीशु ... जिस रीति से तुमने उसे जाते हुए देखा उसी रीति से वह फिर आएगा।'' यीशु स्वर्ग में उठा तो लिया गया, परन्तु एक दिन वह फिर आएगा! भले ही इस पृथ्वी पर कुछ भी होता रहे अन्त में प्रभु दोबारा आकर सब कुछ ठीक कर देगा![23] फिर तो कोई आश्चर्य करने की बात नहीं, जब लूका ने अपने सुसमाचार में कहा कि चेले, ''*बड़े आनन्द* से यरूशलेम लौट गए'' (लूका 24:52)। विजय सुनिश्चित हो गई थी!

द्वितीय आगमन का वायदा आरज़िभक मसीहियों के लिए तसल्ली का बहुत बड़ा कारण था। वे लगातार प्रार्थना कर रहे थे, ''मारानाथा''[24] (1 कुरिन्थियों 16:22) - अर्थात ''हे प्रभु यीशु, आ'' (प्रकाशितवाक्य 22:20)! हम भी उसी प्रकार ढाढ़स रख सकते हैं जैसे स्वर्गदूतों ने प्रेरितों को ढाढ़स दिलाया कि यीशु फिर आ रहा है और उसका आना ''उसी रीति से'' होगा जैसे वह स्वर्ग में उठा लिया गया था-अचानक, सब लोग उसे बादलों में, और सामर्थ के साथ आता देखेंगे![25] यदि द्वितीय आगमन के बारे में हमारा भी वही विश्वास हो जो पहली शताब्दी के मसीहियों का था, तो हमारे जीवनों में कितना बदलाव आ जाए! (देखिए 2 पतरस 3:10, 11)

सारांश

मुक्ति फ़ौज का संस्थापक, विलियम बूथ, जब 80 के आस-पास था, तो वह लगभग अन्धा हो चुका था। बाइबल में उसका पसन्दीदा भाग प्रेरितों की पुस्तक था, यही उसके लिए बार-बार पढ़ा जाता था। जब वह बिस्तर से बिल्कुल भी उठ नहीं सकता था तो, वह बाइबल मंगवाता, अपनी अंगुली उस भाग पर रखता जो काफी घिस चुका था और वह भाग प्रेरितों के काम की पुस्तक थी। वह बुड़बुड़ाता, ''फिर से करना, हे प्रभु। फिर से करना।''

यदि परमेश्वर यीशु को दुखों का बपतिस्मा देकर एक और फसह नहीं देगा तो वह हमें एक और ऐसा पिन्तेकुस्त भी नहीं देगा जिसमें उसने प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया था। ये दोनों घटनाएं एक ही बार होनी थीं। नि:संदेह, परमेश्वर अभी भी सुसमाचार को फैलाने के अपने काम को पूरा कर सकता है, हमारे घर, फिर हमारे आस-पास के इलाके में जहां हम रहते हैं, और फिर अन्त में पूरे संसार में। यह प्रार्थना हम आज भी कर सकते हैं, ''फिर से करना, हे प्रभु। फिर से करना - और यह हमारे द्वारा करना!''

पादटिप्पणियां

[1] शब्दावली में देखें ''यीशु''। [2]यीशु ने पहले *किया* और *फिर* सिखाया। यदि हम अपनी शिक्षा को प्रभावशाली बनाना चाहते हैं, तो पहले हमें अपनी शिक्षा के अनुसार *जीना* होगा (1 तीमुथियुस 4:16)। [3]पूरी तरह से सज़्पूर्ण पुनरुत्थान की एकमात्र सूची 1 कुरिन्थियों 15:5-8 में है, परन्तु सुसमाचार के वृत्तांतों में ऐसे दर्शन मिलते हैं जो 1 कुरिन्थियों 15 में नहीं दिए गए। स्पष्टत:, बहुत से और दर्शन होंगे जो दर्ज नहीं किये गये। [4]इस सामान्य धारणा का कि यहूदियों को प्रतिज्ञा किया हुआ राज्य मिला था, एक मुज़्य कारण है कि उनमें से अधिकांश ने यीशु को मसीह के रूप में स्वीकार नहीं किया। सुसमाचार के वृत्तांतों में प्रेरितों के व्यवहार से पता चलता है कि उन्होंने इस विचार को सही मान लिया था। [5]NIV में ''एक अवसर पर, जब वह उनके खा रहा था ...'' है। विद्वान इस वाक्यांश में क्रिया के अर्थ पर असहमत हैं। हम जानते हैं कि यीशु ने अपने चेलों के साथ खाया (लूका 24:41-43) इसलिए नहीं कि उसे कुछ आवश्यकता थी, बल्कि उनके लाभ के लिए। शायद इन पदों में लूका के मन में यही दृश्य था। [6]शब्दावली में देखें ''बपतिस्मा'' [7]अगले एक भाग में ''पवित्र आत्मा का काम'' दिया जाएगा। [8]''राज्य/कलीसिया की स्थापना'' पर लेख देखें। [9]यह महत्वपूर्ण है कि यूहन्ना ने पवित्र आत्मा और आग दोनों का उल्लेख किया, जबकि यीशु ने केवल पवित्र आत्मा का उल्लेख किया। यूहन्ना मिले जुले लोगों के साथ बात कर रहा था जिसमें पश्चात्तापी और अपश्चात्तापी दोनों तरह के लोग थे। संदर्भ में ''आग'' के हवाले पश्चात्ताप न करने वाले लोगों के दण्ड के लिए हैं (लूका 3:9, 17)। ''आग का बपतिस्मा'' पिन्तेकुस्त के दिन ''आग की सी जीभें'' को नहीं, बल्कि नरक की आग में दुष्टों को मिलने वाले अनन्त दण्ड की (प्रकाशितवाक्य 20:14, 15) बात करता है। [10]कइयों का मानना है कि प्रेरितों को राज्य के स्वरूप की समझ नहीं थी, वे तो केवल यह पूछ रहे थे कि राज्य स्थापित कब होगा। यह सज़्भव है, यद्यपि मेरे ज़्याल से ''फेर'' शब्द और ''इस्राएल'' संकेत करते हैं कि अभी भी राज्य के बारे में यीशु की शिक्षा उन के लिए अस्पष्ट थी।

[11]यूनानी शब्दों के अनुवाद ''समयों'' और ''कालों'' का अर्थ मिलता जुलता ही है। यीशु ने सज़्भवत: इन दोनों शब्दों का प्रयोग एक विचार पर ज़ोर देने के लिए किया: उस *समय* को जानना उनके वश में नहीं था कि परमेश्वर राज्य कब स्थापित करेगा। [12]पिन्तेकुस्त की घटनाएं उनके लिए यीशु की शिक्षाओं को स्पष्ट करती हैं। पिन्तेकुस्त के दिन के बाद, प्रेरितों ने कभी भी राज्य को भौतिक या राजनीतिक अर्थों में लेने की भूल दोबारा नहीं की। [13]उनकी समस्या प्रेरितों की पुस्तक में उनके अगले कार्यों से स्पष्ट है: परमेश्वर ने उन्हें यरूशलेम से बाहर जाने, अन्यजातियों में उन्हें स्वीकार किये जाने, आदि के लिए उन्हें ज़ोर से ''धक्के'' देने थे। [14]प्रेरितों की पुस्तक मुज़्य रूप से दूर-दूर के स्थानों में पौलुस की यात्राओं के बारे में बताती है, परन्तु हमें इस तथ्य को कम करके नहीं आंकना चाहिए कि यह प्रतिज्ञा बारह को ही दी गई थी। आरज़्भिक कलीसिया की परज़्पराएं उन बारह की मिशनरी यात्राओं के बारे में बताती हैं। इन परज़्पराओं की हर बात सही न भी हो परन्तु वे निश्चित ही इस तथ्य में सही हैं कि वे बारह यीशु के संदेश को लेकर दूर-दूर तक गए! [15]बहुत से स्थानों को जहां यह पुस्तक पढ़ी जाती है, अभी भी ''मिशन प्वाइंट'' के रूप में माना जाता है। फिर भी, यदि किसी ''मिशन प्वाइंट'' को वही बनना है जैसा परमेश्वर उसे बनाना चाहता है तो वहां काम के आरज़्भ से ही, ग्रेट कमीशन को आगे ले जाने की योजनाओं की नींव रखी जानी चाहिए। [16]क्योंकि हम प्रेरितों की भांति उसी प्रकार गवाह नहीं हो सकते, इसलिए कई मसीही लोग ''गवाह'' शब्द का प्रयोग करने से हिचकिचाते हैं। क्योंकि लूका ने मुज़्य तौर पर इस शब्द का प्रयोग प्रेरितों द्वारा किये कामों को बताने के लिए किया, इसलिए ''गवाह'' शब्द को सज़्भवत: वह नहीं होना चाहिए जिसका प्रयोग हम अधिकतर यीशु के बारे में दूसरे लोगों को बताने के लिए करते हैं। [17]प्रेरितों 6:13; 13:22; 14:3, 17; 16:2; 22:12; 26:5। [18]प्रेरितों के काम 7 अध्याय में इसके लिए हमें स्तिफनुस का उदाहरण मिलता है। [19]कई लोग इस तथ्य से चिन्तित होते हैं कि यीशु ''*ऊपर* उठा लिया गया'' था; उन्हें लगता है कि इससे यह प्रभाव जाता है कि स्वर्ग ''ऊपर'' है (और नरक ''नीचे'') ... किन्तु विचार कीजिए: परमेश्वर मनुष्य के मन में यह संदेश और किस ढंग से डाल सकता था कि यीशु ने वास्तव में इस पृथ्वी को *छोड़ दिया*? ''ऊपर'' के सिवाय

वह और किस दिशा को-अर्थात, *पृथ्वी से* दूर किस दिशा में जा सकता था? [20]इफिसियों 4:10; 1 तीमुथियुस 3:16; 1 पतरस 3:22.

[21]यह एक ढंग है जिससे लूका ने स्वर्गदूतों की बात की (लूका 24:4)। शायद वहां *दो* स्वर्गदूत दो ''गवाहियां'' देने के लिए थे (व्यवस्थाविवरण 19:15)। [22]प्रचारकों ने आम तौर पर नोट किया है कि ''आकाश की ओर देखकर'' समय नष्ट करने के बजाय, चेलों को *काम* की तैयारी करने के लिए यरूशलेम लौटना था। वे इसे इस प्रकार प्रासंगिक व व्यावहारिक बनाते हैं: ''कइयों के मन इतने स्वर्गीय हैं, कि वे पृथ्वी के किसी काम के नहीं।'' [23]इसकी तुलना एक छोटी सेना के एक जयंकर शत्रु के साथ युद्ध से की जा सकती है, जो यह जानते हुए युद्ध करती है कि बहुत बड़ी सेना से हमारा युद्ध होने वाला है! [24]शब्दावली में देखिए ''मारानाथा'' [25]कइयों ने प्रभु के वापिस आने की तिथि आदि की घोषणा की, जब वह वापिस नहीं आया तो उन्हें केवल परेशानी ही मिली। फिर वे कहने लगे कि प्रजु कुछ चुने हुए लोगों पर अदृश्य रूप से प्रकट हुआ और फिर उसने वापिस जाने और बाद में फिर प्रकट होने की कोशिश करने का फैसला किया। द्वितीय आगमन के सज़्बन्ध में प्रेरितों 1:11 और अन्य आयतें उनकी स्वयं गढ़ी इस भूल को उघाढ़ती हैं (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)।